आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 12 | उदयपुर सोमवार 01 जुलाई 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

नीला घोड़ा चेतक अबलक रंग का था

– डॉ. महेन्द्र भानावत –

शक्ति और भक्ति के प्रतीकात्मक रूप में हमारे यहां वाहनों का बड़ा दिलचस्प इतिहास रहा है। अपने शौर्य, पराक्रम, कर्तव्य-निष्ठा, स्वामी समर्पण भाव, बुद्धि-कौशल तथा प्रत्युत्पन्न मति एवं दूरदर्शिता के फलस्वरूप इन वाहनों ने अपने स्वामी के कर्म-धर्म को अमरता का जो स्वर्ण-पृष्ठ दिया, उससे हमारी सभ्यता तथा संस्कृति के कई अध्याय आलोकित हुए हैं।

इन वाहनों में घोड़ों के प्रति जितनी श्रद्धा, आस्था, पूजा, प्रतिष्ठा तथा लोकमंगल की भावना रही है उतनी अन्य वाहनों के साथ नहीं। लोकजीवन में ऐसे कई घटना-प्रसंग हैं जहां अपने स्वामियों से भी अधिक उनके वाहनों-घोड़ों की पूजा-मनौती बोली जाती है।

भाद्र में रामदेवरा में लगने वाले रामदेव बाबा के मेले में मनौतीधारी अपने कार्य की सिद्धि पर रामदेवजी को कपड़े के बने बड़े कलात्मक घोड़े चढ़ाते हैं। ये घोड़े तीन-तीन इंच से लेकर पांच-पांच फीट तक की ऊंचाई लिए होते हैं। रामदेवजी के रेवंत नामक घोड़े के कई चमत्कार भरे अलौकिक किस्से सुनने को मिलते हैं। श्रद्धालु जनता शक्ति-स्वरूप इन घोड़ों को चढ़ा कर अजमाल के कंवर को 'खमा' देती हुई अपने को पावन करती है।

गोगा नवमी पर गोगाजी के रूप में मिट्टी का घोड़ा पूजा जाता है। इसे कुम्हार बनाते हैं। मारवाड़ की ओर मैंने कई जातियों में गोगा-पूजा के रूप में हरिये गोबर से घर की दीवालों पर गोगा-घोड़े को थापित कर उसे पूजते देखा है। लोकजीवन में पाबूजी को देव-रूप में प्रतिष्ठित करने वाली उनकी केसर कालमी घोड़ी ही थी।

पड़ों में आज सर्वाधिक पड़ें पाबूजी की ही बांची-बंचवाई जाती हैं। बहलिया की पीवली, बालणराव की हिरणी, दूदा जसहाड़ोत की रीमी, भोजा की बूंली, साढू माता की काली घोड़ी, बीरमदे की समाध, बैरसी की ताजण घोड़ी यदि नहीं होती तो आज इनके नामठाम ही नहीं रहते। तब समाज और इतिहास के आंक ही कुछ और होते। तब सामाजिक, सांस्कृतिक लोकधर्मिता के मूल बिन्दु ही बदले हुए होते। तब सारा नक्शा ही कुछ और होता।

नौलखा, कन्हैया, माणकराज जैसे घोड़ों पर बगड़ावत गाजते और जो सोचते, कर गुजरते। ये घोड़े क्या थे, जैसे जादू थे, सिद्ध थे। गुना-मेनू और धर्मराज का अस्तित्व भी उनके घोड़ों के कारण अक्षुण्ण रहा। यदि इनके पास ऐसे हरावल नहीं होते तो आज उनका कोई नाम तक नहीं जानता। आज उनकी धाम और धर्म-ध्वजा देखने को नहीं मिलती।

देवनारायण की पड़ में उनका नीलकरण घोड़ा दिखाया जाता है जो माता साढू की काली घोड़ी से उत्पन्न है। इसी के बल पर देवनारायण ने बगड़ावतों का वैर शोधन किया। प्रसिद्धि है कि जहां उसके मुंह से झाग पड़ते वहां बिच्छू पैदा हो जाते।

वीरवर महाराणा प्रताप का नीला घोड़ा चेतक भी ऐसा ही नीलकरण था जो शक्ति और स्फूर्ति में बेजोड़ था। स्वतंत्रता के पुजारी के रूप में प्रताप का यश चेतक की वजह से कई गुना बढ़ गया। इसलिए 'नीला घोड़ा रा असवार' के रूप में प्रताप की लोकप्रियता के गीत-बोलन मेवाड़ की माटी में गन्धे-सुगन्धे हैं। डिंगल कवि देवकर्णसिंह ने ठीक ही कहा-

धणी सूं पशु पछाणह्यो चेटक बात अपार।
जगत पातल़ जाणले नीला रो असवार।।
सीख दीयण स्वामी भक्ति मनखा नूं इण ढंग।
दैवत गुण त्रारण कर्‌या पशु दे धरन तुरंग।।

स्वामी से पशु की पहचान होती है। ये गायें, ये बैल, ऊंट और बकरियां फलां-फलां आदमी की हैं परन्तु चेतक इसका अपवाद है। यहां तो चेतक की वजह से प्रताप की पहचान है। प्रताप कौन? वही जो नीले घोड़े का सवार है। पशु देह धारण कर भी चेतक ऐसा देवगुणी था। हल्दीघाटी युद्ध में यद्यपि महाराणा इस पर सवार थे परन्तु चेतक का अस्तित्व एक स्वतंत्र योद्धा से किसी कदर कम नहीं था। उसका युद्ध-कौशल, अरि-दमन की क्षमता, शौर्य और बल-कल-अटकल से वह अपनी अलग पहचान देता था। अपने स्वामी से अधिक जिसने अपने को जोखिम में डाल दिया, उसकी स्वामीभक्ति का और क्या प्रमाण चाहिये।

स्वयं प्रताप चेतक की सौगंध खाकर कहते हैं कि जब खान हकीम, भामाशाह, झाला मान और बाकी सब युद्ध में लीन होकर लड़ रहे हैं तब देश की स्वाधीनता निस्सन्देह है। कविवर रामसिंह सोलंकी ने अपने 'जननायक प्रताप' काव्य में कितनी खूबसूरती से यह बात कही है-

रांव खान भामो मना भील अवर जुद लीन
चेटक री सौगन कहूं देस रहे स्वाधीन।

यही नहीं, चेतक की मृत्यु पर महाराणा भावविह्वल हो फूट पड़ते हैं-

नहँ तीरां भालां प्रबल मुवो न खायां पाण।
सगत पते मीठे मिलण चेटक वार्‌या प्राण।।
जो गल चाह सुमेर प्रभु ले अमर्‌यो मनुहार।
चेटक ने मत वरण कर नांदी रा असवार।।
सहस-सहस भड़ जूं झतूं थ्यां किस लडूं महेस।
इक भाई घर आवियो बीजो गयो विदेस।।

प्रताप ने चेतक को अपना भाई समझा तो चेतक ने भी प्रताप को अपना स्वामी, साथी, सखा और सर्वस्व समझा। अरिदल का मुकाबला करने में चेतक ने अपनी टांग गंवादी पर प्रताप को इसका संकेत तक नहीं दिया और अन्त में अपने प्राणों तक का बलिदान कर दिया।

हल्दीघाटी के पूरे युद्ध में यदि कोई विशेष रूप से उभरा तो वह चेतक ही था। अरावली का हर पत्थर और हल्दीघाटी का हर जर्रा चेतक की टापों से गुंजित है। हल्दीघाटी में चेतक की समाधि उस सारे युद्ध की जीवंतता का जैसे काल-कलश है। नीले घोड़े का अर्थ सफेद घोड़े से है।

चेतक सफेद मिश्रित नील रंगा था। उसमें हल्की कालिमा की झांई थी। ऐसा रंग अबलक कहलाता था और ऐसे घोड़े अबलक घोड़े कहे जाते हैं। सफेद ऐसा जैसे चटक चांदनी हो। जैसे किसी पानी वाले नारियल की ताजी गिरी हो। जैसे किसी खेत का तड़का फूला उन्नत कपास हो। वह हंस था प्रताप के मानस का।

प्रताप और चेतक एक-दूसरे के पूरक थे। चेतक अपने स्वामी की गंध को पहचानता था इसलिए उसने जीते जी किसी दूसरे को अपनी पीठ पर नहीं बैठने दिया। यदि चेतक नहीं होता तो हल्दीघाटी का वह सुरंगा रंग नहीं होता। तब उसका इतिहास स्वाधीनता और स्वतंत्रता का वह रंग नहीं देता जो आज दे रहा है। तब प्रताप का प्रतापी इतिहास इतना दीप्त नहीं होता जिसका लोहा आज विश्व मान रहा है।

एक हुकुम-जी हुकुम सा

-हरमन चौहान-

हेड क्वाटर सूं
दूरदराज इलाका के दफ्तर में
तार सूं एक हुकुम जारी हुयो-
उत्पादन रा आंकड़ा बैगा खिनावो।
हुकुम रौ पालण होवणौ इज हो
बड़ा साब छोटा साब ने हुकुम ढाळियौ-
तार रै मुजब काम फटाफट व्हैणो चाहिजै।
छोटा साब तार हाथ में झेळियो, पछै-
जी, हुकुम सा
बोल'र आपरै चैम्बर मांय घुसिया
छोटा साब बड़ा बाबू ने
अर बड़ा बाबू छोटा बाबू ने
यूं रौ यूं, जी हुकुम सा, जी, हुकुम सा
करता आगै सूं आगै हुकुम ढाळियो
छोटा बाबू भी जी हुकुम सा कर'र
ठेकेदार ने बुलाय'र हुकुम ढाळ दियौ
ठेकेदार भी जी हुकुम सा, कर'र पूछियौ-
कांई हुकुम है, फरमावौ
छोटौ बाबू तार रौ मुजब भांप'र फटाफट
उणसूं अेक ट्रक मंगवायौ अर इलाका रा
सगळा आंकडा करवाय'र मुख्यालय भिजवाय दिया।
उणरी कांई गलती? तार विभाग व्हाळा
तार में आंकड़ा री जगै आकड़ौ कर दियौ हो
छोटा बाबू ने अचरज उण टैम हुयो-
जद मुख्यालय सूं उचित माध्यम सूं धन्यवाद रौ
अर बड़ा साब ने डांट रौ पत्र मिळियौ।

रानीजी और बगड़ावत महागाथा

रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रकाशन 'बगड़ावत देवनारायण महागाथा' है। मेरा यह सौभाग्य रहा कि रानीजी के साथ मैं भी इस गाथा-कार्य से जुड़ा रहा। उनके साथ मैं पड़ चितेरे श्रीलालजी जोशी के साथ गया और बगड़ावत गाने वाले भोपों से भी मिले।

भारतीय लोककला मण्डल में मैंने मावली के गायक अम्बालाल सालवी को कई दिन रख कर देवनारायण के साथ-साथ अन्य लोकदेवी-देवताओं से सम्बन्धित गाथाओं का रेकार्डिंग किया। अम्बालाल को कई गाथाएं कंठस्थ थीं। वह घण्टों तक बिना थके गाने में प्रवीण था।

पांडवों का भारत, ताखा-अम्बाव का भारत, काला-गोरा का भारत तथा देवनारायण का भारत जैसी गाथाएं सुनकर कला मण्डल से मेरे सम्पादन में उनका प्रकाशन भी हुआ। रानीजी को ये प्रकाशन बड़े उपयोगी तथा मूल्यवान लगे।

बगड़ावत देवनारायण महागाथा की भूमिका में रानीजी ने कला मण्डल में अम्बा भोपा द्वारा लिखित देवनारायण गाथा का उल्लेख करते हुए उसका कुछ पाठ भी उद्घृत किया। संक्षिप्त बगड़ावत गाथा का अलग से हमने भी रेकार्डिंग किया था। एकदिन रानीजी कला मण्डल आईं। भेंट के दौरान देवीलाल सामरजी ने बताया कि रानीजी बगड़ावत महागाथा का सम्पादन कर रही हैं। उसमें उन्हें मुझे सहयोग करना है।

रानीजी ने बगड़ावत महागाथा की पाण्डुलिपि दिखाते हुए बताया कि मुझे उसका पाठ-सम्पादन करना है। मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि रानीजी ने मुझे इस योग्य समझा।

इससे मेरा अनुभव क्षेत्र भी विस्तृत बनेगा और बगड़ावतों के सम्बन्ध में मैं अधिक गहराई से जान सकूंगा। मैंने रानीजी से कहा कि फिलहाल वे 8-10 पन्ने ही दें ताकि मेरे कार्य को वे ठीक से आंक सकें और उन्हें जचने पर ही मैं आगे बढ़ूं। यह बात उनके समझ में आ गई।

दूसरे दिन मैंने अपने सम्पादन के साथ रानीजी के पास वे पन्ने भिजवा दिये। तीसरे दिन रानीजी से कला मण्डल में भेंट हुई। मैंने उन्हें बताया कि संभवत: मुझ से पूर्व यह कार्य किसी ऐसे व्यक्ति के हाथों हुआ है जिसके कारण पूरा पाठ ही डिंगलमय कर दिया गया है।

यह सुन रानीजी को बड़ा अचरज हुआ। उन्होंने पूछा कि मुझे कैसे पता लगा। मैंने कोई जवाब नहीं दिया। बात आई-गई हो गई लेकिन रानीजी ने मुझे वह पाण्डुलिपि दी और यह कार्य सम्पादित करने को कहा। वे गर्मी के दिन थे। मुझे याद है, मैंने पन्द्रह दिन का अवकाश लेकर चांदनी पर छत की डोली के सहारे धूप-छांह खाते वह कार्य पूरा कर दिया।

रानीजी की ओर से श्रीकृष्णजी शर्मा मेरे से सम्पर्क में रहे और बताते रहे कि रानीजी मेरे इस कार्य से पूर्णत: संतुष्ट हुईं हैं। यही नहीं, जब वह महागाथा छपकर आई तो एक प्रति उन्होंने मेरे पास भी भेजी। उसके बाद सन् 2001 में उसका द्वितीय संस्करण प्रकाशित हुआ।

अब उसका तृतीय संस्करण राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर से प्रकाशित होने जा रहा है। यह सूचना ग्रंथागार के संचालक राजेन्द्रजी सिंघवी ने मुझे दी तो मैंने तत्काल जयपुर रह रहे अपने पुराने दोस्त श्रीकृष्णजी शर्मा को जानकारी दी तो उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। बोले, रानीजी होतीं तो फिर उनके साथ मेरा जुड़ाव होता और उस महागाथा-ग्रंथ का परिवर्धित शानदार संस्करण निकलता।

फूलों में सर्वश्रेष्ठ फूल

राजस्थान की लोक प्रचलित महागाथा बगड़ावत में वर्णन आता है जिसमें जैमती अपनी दासी हीरां को बगड़ावतों से पूछना कराती है कि फूलों में कौनसा फूल श्रेष्ठ है। इसका जवाब भोजा का छोटा भाई नीयां देता है-

- संसार का श्रेष्ठ फूल गाय होती है जिस पर सारी अर्थ-व्यवस्था टिकी है। उसके बछड़ों के बल पर ही कृषि होती है।
- श्रेष्ठ फूल घोड़ी है जिसकी शक्ति पर ही राज्य टिके हुए हैं।
- श्रेष्ठ फूल कपास है जिससे कपड़े बना संसार अपना तन ढकता है।
- श्रेष्ठ फूल सूरज है जिसके निकलते ही नर-नारी काम पर लग जाते हैं।
- सर्वश्रेष्ठ फूल वर्षा है। यदि वर्षा नहीं हो तो संसार के सारे फूल कु-फूल हो जायें। सब कुछ वर्षा पर निर्भर है।

अशुभ से बचाव के लिए पशु-पक्षियों को दाना पानी

-डॉ. शुकदेव चतुर्वेदी-

ग्रहों के अशुभ प्रभाव से बचाव और शुभ फल में वृद्धि के लिए अनेक उपाय प्रचलित हैं।

इनमें से पशु-पक्षियों की सेवा भी एक है। भारतीय परिवारों में भोजन से पहले गाय-कुत्ते के लिए प्रतिदिन रोटी निकालने की परम्परा देखी जा सकती है तो विभिन्न अवसरों पर पशुओं की पूजा भी होती है।

विभिन्न ग्रहों के कुप्रभाव से मुक्ति के लिए ग्रह-विशेष से सम्बन्धित पशु-पक्षी की सेवा करनी चाहिये। यहां ऐसी ही कुछ जानकारी प्रस्तुत है।

सूर्य - लाल गाय या सांड को गेहूं और गुड़ खिलाना, गौरेया को दाना चुगाना आदि सूर्य शान्ति के उपाय हैं।

चन्द्रमा - सोमवार को गाय को गुलगुले खिलाना, खरगोश को दूब चराना, चींटियों को मीठा डालना आदि चन्द्रमा शान्ति के उपाय हैं।

मंगल - बन्दरों को चना खिलाना, लंगूरों को केले खिलाना, मुर्गियों को दाना चुगाना आदि मंगल शान्ति के उपाय हैं।

बुध - गाय को घास या हरी सब्जी खिलाना, तोतों को हरी मिर्च खिलाना या दाना चुगाना आदि बुध शान्ति के उपाय हैं।

गुरु - गाय को चने की दाल और गुड़ खिलाना, पीली गाय की पूजा करना, बतखों को दाना चुगाना आदि बृहस्पति (गुरु) शान्ति के उपाय हैं।

शुक्र - कपिला गाय को आटा खिलाना, कबूतरों को दाना चुगाना, कुत्ते को मीठी रोटी खिलाना, मोर को दाना चुगाना आदि शुक्र शान्ति के उपाय हैं।

शनि - भैंस या भैंसा को रातब खिलाना, काली बकरी को पत्ते खिलाना, काली बिल्ली को दूध पिलाना आदि शनि शान्ति के उपाय हैं।

राहु - सांप की सेवा, कुत्ते को दूध पिलाना, कछुआ को आटे की गोली खिलाना, कौओं को रोटी डालना आदि राहु शान्ति के उपाय हैं।

केतु - मछली को सतंजा की गोली डालना, मछली को रामनाम की गोली डालना, अजगर सेवा, कौवों को चुग्गा डालना आदि केतु शान्ति के उपाय हैं।

नारायण सेवा संस्थान में पोस्ट ऑफिस का शुभारंभ

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान के बड़ी स्थित लियों का गुड़ा स्मार्ट विलेज में इंडिया पोस्ट द्वारा पोस्ट ऑफिस का शुभारंभ किया गया। शुभारंभ मुख्य अतिथि चीफ पोस्ट मास्टर जनरल राजस्थान परिमण्डल, जयपुर, रामभरोसा, विशिष्ट अतिथि प्रवर अधीक्षक उदयपुर मण्डल जे. एस. गुर्जर, संस्थापक पद्मश्री कैलाश अग्रवाल तथा अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने किया।

इस अवसर पर श्री रामभरोसा ने कहा कि नारायण सेवा संस्थान में भारत बसता है। यहां पर देश के विभिन्न हिस्सों मसलन गुजरात, हरियाणा, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, झारखंड, आंध्रप्रदेश, पंजाब, दिल्ली, बिहार, चंडीगढ़ सहित विभिन्न प्रदेशों के

दिव्यांग अपना इलाज करवाकर नया जीवन प्राप्त करते हैं। ऐसी जगह पर पोस्ट ऑफिस का खुलना अपनेआप में गौरव की अनुभूति है। उन्होंने कहा कि अब दिव्यांग दौड़ेगा, यह सपना साकार होने जा रहा है।

श्री रामभरोसा ने कहा कि इस पोस्ट ऑफिस में सरकारी योजनाएं, बैंकिंग प्रणाली तथा पोस्ट कार्ड उपलब्ध करवाना शामिल हैं। अब दिव्यांग लोग राशि की जांच के साथ नकदी जमा और निकाल सकते हैं।

संस्थापक कैलाश अग्रवाल ने कहा कि डाक विभाग ने हमारे समर्पण और कड़ी मेहनत को मान्यता दी है। दिव्यांगों के लिए यह पोस्ट ऑफिस पैसे ट्रांसफर करने में भी मददगार होगा।

अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने इस कार्य के लिए श्री रामभरोसा का आभार व्यक्त किया और कहा कि लियों का गुड़ा को स्मार्ट विलेज बनाने का जो उन्होंने सपना देखा, वह आज पूरा होता दिख रहा है क्योंकि यहां पर शिक्षा, चिकित्सा, एटीएम सुविधाओं के साथ अब पोस्ट ऑफिस भी है।

आचार्य निरंजननाथ सम्मान समारोह

आचार्य निरंजननाथ की स्मृति में दिये जाने वाला सम्मान इस वर्ष

हिन्दी की तीन विधाओं उपन्यास, कहानी तथा कविता पर प्रदान किया गया। इनमें क्रमश 'अकाल में उत्सव' के लिए पंकज सुबीर, 'हवा में ठहरा सवाल' के लिए गोपाल सहर तथा 'विज्ञप्ति भर बारिश' के लिए ओम नागर को इक्कीस - इक्कीस हजार रूपये नकद भेंट किये गये। इसके साथ ही ग्यारह हजार रूपये का पुरस्कार मुरलीधर कनेरिया को उनके साहित्यिक अवदान पर प्रदान किया गया। सम्मान समिति के संयोजक कमर मेवाड़ी ने आचार्य साहब से जुड़े संस्मरण सुनाये। समिति के अध्यक्ष कर्नल देशबन्धु आचार्य ने कहा कि अब यह सम्मान साहित्य की तीन अलग-अलग विधाओं में प्रदान किया जाता रहेगा। समारोह की अध्यक्षता माधव नागदा ने की। इस अवसर पर श्रीमती सुधा आचार्य की कविता पुस्तक 'है कुछ और भी' का लोकार्पण किया गया।

-प्रस्तुति : डॉ. नरेन्द्र निर्मल

स्मृतियों के शिखर (79) : डॉ. महेन्द्र भानावत

नृत्यकला के चल संग्रहालय थे मोहन खोखर

उन्होंने इस पर बड़ा दु:ख व्यक्त किया कि हमारे देश में कलाकारों, विद्वानों और गुणीजनों को कोई समझने वाला, उनकी कद्र करने वाला और उन्हें सम्मान देने वाला नहीं है। सरकार तो उनके किये कार्यों पर झाड़ू लगाने में रहती है। यही कारण है कि सोने की चिड़िया कहा जाने वाला भारत आज रोने की चिड़िया बना हुआ है।

उदयपुर में 02 मार्च 1992 को अपने निवास पर मोहन खोखर से की गई भेंट अब तक याद है। उनके साथ इंग्लैण्ड की कत्थक नृत्यांगना मेरी वारन थीं। खोखर भारतीय नृत्यकला के अद्‌भुत मनीषी विद्वान ही नहीं, अद्‌भुत खोजकार भी थे जिन्होंने पिछले चार-पांच दशकों में जिस रूप में जहां भी भारतीय नृत्यकला की अवस्थिति पाई उसे संग्रहित करते कैमरे में कैद भी किया।

कथकली, कत्थक और भरतनाट्यम के वे जाने-माने कलाकार थे। मद्रास के कला क्षेत्र में और गुरु डंडे पानी पिल्ले से यह नृत्य सीखा। अच्छी सितार भी सीखी। उदयशंकर के साथ भी रहे।

बारह साल बड़ौदा में रहे जब पहली बार वहां छह विषय खोले गये। उप कुलपति हंसा मेहता ने यह विश्वविद्यालय प्रारम्भ किया था। खोखर वहीं नृत्य विभाग के अध्यक्ष बने। चित्रकला के प्रो. बेन्द्रे, नाटक के सी. सी. मेहता, मूर्ति के शंकु चौधरी जैसी जानी-मानी हस्तियां वहां जुड़ीं।

खोखर ने बताया कि वर्ष में छह माह अवकाश होता तब वे अपनी नृत्यकला की भूख मिटाने निकल पड़ते। ऐसे करते-करते वे सभी प्रान्तों में घूमते रहे।

नृत्यविदों और कलाकारों से मिलते रहे। जिस विधा और रूप-स्वरूप में जैसा जो भी कुछ नृत्य से जुड़ा मिला, उसका संग्रह करते रहे। अगरबत्ती के पैकेट, लोटरी के टिकिट, माचिस के खोखे, बेडशीट, हस्तलिखित ग्रन्थ, मूर्ति चित्र आदि पर जहां-जहां भी नृत्य पाया-मिला, सबका संग्रह किया।

उदयशंकर

इस संग्रह में आठ सौ साल पुरानी एक मूर्ति तोल से मद्रास में पैंतीस रूपये में खरीदी जिसकी कीमत ही तब पांच लाख रूपये थी। ऐसे ही एक अर्द्धनारीश्वर की मूर्ति हाथ लगी।

वैसी मूर्ति पूरे देश में दो-तीन जगह ही मिलेगी। वाजिद अलीशाह की लिखी-छपी तीन नृत्य पुस्तकें भी उनके पास थीं जो उनकी निजी थीं। देश में अन्यत्र किसी जगह ये तीनों पुस्तकें नहीं हैं।

खोखर ने अपनी स्मृतियों का पिटारा खोलते मुझे बताया कि एक पत्र उदयशंकर का अपनी पत्नी अमला को लिखा उनके पास ऐसा था जिसको बीस हजार डॉलर में खरीदने वाले मिले पर वे अपनी कोई सामग्री बेचना नहीं चाहते थे।

कुछ वर्ष पूर्व उनके संग्रह को अमेरिका का लिंकन सेन्टर खरीदना चाहता था जिसके लिए 75 हजार डॉलर देने की ऑफर थी।

मोहन खोखर ने भारतीय नृत्यकला पर दो पुस्तकें लिखीं। वे बड़ी प्रामाणिक और खोजपूर्ण मानी गई। उन्होंने जो कुछ लिखा स्वयं देखकर, यात्रा कर, उस विधा में जी कर लिखा। चालीस हजार तो नृत्य-चित्र ही उनके पास अपने स्वयं के खींचे हुए थे। दो लाख से ऊपर छपे चित्रों की कटिंग्स उन्होंने सुरक्षित की हुई थी।

मुझे लगा कि मोहन खोखर भारतीय नृत्यकला की पूरी शताब्दी ही अपने में लिए हैं। वे उस कला के पूरे इतिहास को अपने में जीवन्त किये हैं। सन् 1962 से 1979 तक वे संगीत नाटक अकादमी में रहे पर उन्हें वहां कुछ नहीं करने दिया गया और जो कुछ उन्होंने अपना व्यक्तिगत किया उस पर भी भाई लोग पानी फेरने को आमादा हुए। उनका वहां का 75 हजार रूपये का प्रोविडेंट फंड का पैसा तक उलझा दिया जो तब तक उन्हें नहीं मिला था।

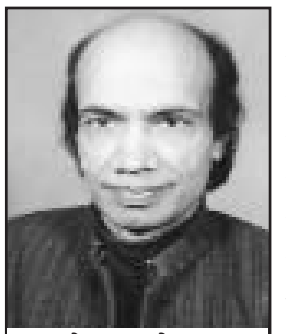

मोहन खोखर

उन्होंने इस पर बड़ा दु:ख व्यक्त किया कि हमारे देश में कलाकारों, विद्वानों और गुणीजनों को कोई समझने वाला, उनकी कद्र करने वाला और उन्हें सम्मान देने वाला नहीं है। सरकार तो उनके किये कार्यों पर झाड़ू लगाने में रहती है। यही कारण है कि सोने की चिड़िया कहा जाने वाला भारत आज रोने की चिड़िया बना हुआ है।

खोखरजी के साथ आई मेरी वारन भारत से अपरिचित नहीं है। यहां रहकर उसने कत्थक सीखा और कत्थक से जुड़े गुरुओं और नृत्यकारों के सम्पर्क में आई। उसने बताया कि जैसे मोहन खोखर ने उदयशंकर पर पुस्तक लिखी वैसे ही वे मोहन खोखर पर एक पुस्तक लिख रही हैं।

मोहन खोखर यहां दो दिन रहे और उन्होंने भारतीय लोककला मण्डल के संस्थापक देवीलाल सामर की लोकनृत्यों के क्षेत्र में जो देन रही उस पर मेरे से विस्तृत जानकारी ली।

मुझे बहुत अच्छा लगा कि दस-पन्द्रह वर्ष पूर्व तक जिनसे मेरा पत्राचार रहा उन मोहन खोखर से मैं बाथ भर मिल सका। उन्हें एक पूरी समग्रता में जान सका और उनके साथ अपने स्नेह-मिलन के आंसू भी छलका सका।

मेरे पास मोहन खोखर के पांच पत्र हैं। सभी पत्र अलग-अलग लेटर पेड पर हैं। इससे उनकी कलात्मक रूचि का भी पता चलता है। तीन पत्र अंग्रेजी में और दो हिन्दी में हैं। पहला पत्र 19 जुलाई 1980 का है जो इस प्रकार है-

पूजनीय डॉ. महेन्द्र भानावतजी,

मैं आजकल कथक नृत्य पर एक पुस्तक लिख रहा हूं। इसके लिए कई वर्षों से सामग्री एकत्रित कर रहा हूं। कई तरह से कोशिश करने के बाद भी उदयपुर दरबार में कथक का स्थान एवं इतिहास इस विषय में कुछ जानकारी प्राप्त नहीं हुई है।

श्री देवीलालजी सामर को भी लिखा था लेकिन व्यस्त होने के कारण वो कुछ सहायता नहीं कर पाये। इसलिए अन्त में आपको लिख रहा हूं।

अगर आप मेरी इस खोज में कुछ मदद कर सकें तो मैं आपका बहुत आभारी रहूंगा। मेरे पास समय बहुत कम है। क्योंकि इस महीने के अन्त तक किताब प्रकाशन को दे देनी है। इसलिए आपसे दोबारा निवेदन है कि इस पत्र का उत्तर बहुत ही शीघ्र दें।

आपका

मोहन खोखर

इसके उत्तर में मैंने उनको 23 जुलाई को सामग्री भेजने के लिए और 7 अगस्त को उनके द्वारा चाही गई जानकारी और सामग्री भेजी।

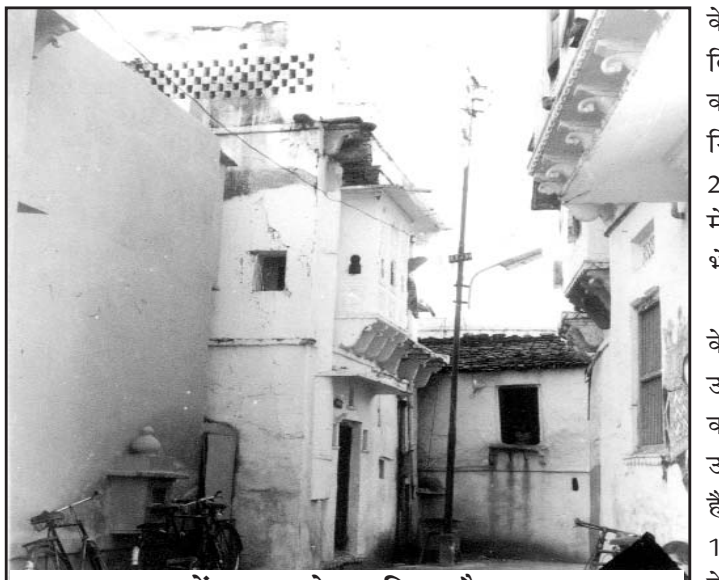

उदयपुर में गड्‌या देवरा स्थित पैतृक मकान जहां उदयशंकर का जन्म हुआ

अपने 29 अगस्त 1984 के पत्र में उन्होंने मुझे सूचित किया कि वे संगीत नाटक अकादमी में पहले पहल नृत्य सलाहकार रहे और बाद में सचिव बने फिर उसे भी छोड़ दी। इन दिनों उदयशंकर पर एक डोक्युमेन्ट्री फिल्म बन रही है जिसके वे सलाहकार हैं। उदयशंकर उदयपुर में जन्मे और वहीं रहे सो वे उस निवास को शूट करना चाहेंगे।

सितम्बर 25 के आसपास फिल्म यूनिट आना चाहेगी। मैंने उन्हें विस्तारपूर्वक लिखा कि उदयशंकर का निवास पीछोला के किनारे गड़िये देवरे के पास रहा जिस पर मैंने धर्मयुग में भी लिखा था।

यह पत्र पाकर वे बड़े प्रसन्न हुए और फोन पर धन्यवाद आभार व्यक्त कर बोले कि उनकी चाह के मुताबित सारा कार्य बेहतरीन ढंग से हो गया है।

एक पत्र उन्होंने 10 मार्च 1994 को लिखा कि वे भारत के लोक तथा आदिवासी नृत्यों पर एक पुस्तक लिख रहे हैं। इसके लिए राजस्थान से संबंधित नृत्य विषयक सामग्री तथा फोटोग्राफ चाहियें। जयपुर में वे कौशल भार्गव से मिले जिन्होंने उदयपुर जाने की सलाह दी। उन्होंने बांसवाड़ा मालिनी काले को भी लिखा किंतु उनसे कोई उत्तर नहीं मिला। मैंने उन्हें सहयोग के आश्वासन का पत्र लिखा और कुछ जानकारी भी भेजी।

एक पत्र 20 जुलाई 1994 का मेरे पास है जिसमें उन्होंने राजस्थानी लोकनृत्य घूमर, गेर, तेराताल और भवाई संबंधी जानकारी चाही। इसके लिए उन्होंने पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र को भी लिखा पर वहां से कोई उत्तर नहीं मिला। मैंने अपने 28 जुलाई के पत्र में उन्हें जानकारी भेजी।

नृत्य कला के बेजोड़ साधक उदयशंकर झीलों की नगरी उदयपुर की देन हैं। दिसम्बर 1900 में पीछोला के किनारे स्थित गड्‌या देवरा के पास की पांडूवाड़ी बस्ती में उनका जन्म हुआ। उनके पिता श्यामाशंकर उदयपुर महाराणा भूपालसिंह के दरबारी थे। माता हेमांगनादेवी भी गायन वादन तथा नर्तन कला में विशेष अभिरूचि लिए थी। श्यामाशंकर ने लगभग बीस वर्ष तक महाराणा की सेवा की।

वे यहां मिडिल स्कूल के हेडमास्टर थे परन्तु अपनी योग्यता एवं प्रभावी व्यक्तित्व से महाराणा के निजी सचिव बन गये। उदयपुर में जन्म लेने के कारण ही श्यामाशंकर ने अपने पुत्र का नाम उदयशंकर रखा।

शब्द रंजन
उदयपुर, सोमवार 01 जुलाई 2019

सम्पादकीय

साहित्यिक पत्रिकाओं का प्रकाशन

एक सज्जन मिलने आये। वे साहित्यजीवी थे सो साहित्य की बातें चलती रहीं। साहित्य की जितनी पत्रिकाएं इन दिनों निकल रही हैं, पहले कभी नहीं देखी गई पर जो पहले निकलती थीं वे अब भी महत्त्वपूर्ण रूप में याद की जा रही हैं जबकि आज की पत्रिकाएं कम जानी जा रही हैं और उनकी वैसी पहचान भी नहीं बन पा रही हैं।

पहचान का संकट पहले नहीं था तब भी पहचान बनी रहती थी। आज सारी शक्ति पहचान बनाने के लिए लग रही है तब भी वह बात नहीं रही। इसके अनेक कारण खोजे जा सकते हैं।

साहित्यिक संस्थानों से प्रकाशित पत्रिकाओं के लिए कहा जाता है कि उनका अधिक ध्यान ग्राहक संख्या बढ़ाने का रहता है पर किसी कारण कोई ग्राहक बन भी गया तो आगे उसे बनाये रखने की सम्भावना नहीं बनी रहती है। नतीजतन यह संख्या घटती रहती है इसलिए एक विकल्प यह निकाला गया कि जिनकी रचनाएं छपें उन्हें देय पारिश्रमिक से वर्ष भर का शुल्क काट लिया जाय। ऐसे करते-करते हर अंक में नये-नये लेखक छपते रहते हैं और पत्रिका की ग्राहक संख्या बढ़ती रहती है।

जब लक्ष्य ग्राहक संख्या की बढ़ोतरी का रहेगा तब रचना की गुणवत्ता गौण हो जायेगी लेकिन ऐसी पत्रिकाएं भी हैं जो पारिश्रमिक नहीं देती है किन्तु उनमें भी रचनाशीलता की गुणवत्ता का अभाव ही मिलता है। उनका कथन होता है अच्छे लेखकों का अभाव।

निजी स्तर पर जो पत्रिकाएं निकल रही हैं उनकी समस्या दूसरी है। उनके जो सम्पादक हैं वे एक मिशन के तौर पर नहीं अपितु शौकीयाना ढंग से अपनी पत्रिका निकालते हैं और अपने ढंग से उसकी व्यवस्था करते हैं।

लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि अच्छी पत्रिकाओं का अभाव है। वे निकल रही हैं किन्तु उनका नियमित प्रकाशन कम होता है। इस दृष्टि से छोटी पत्रिकाएं तो पिट ही रही हैं किन्तु तब जो बड़ी पत्रिकाएं निकलती थीं वे भी अन्त में घाटे में चलने लगीं और उन्हें भी बन्द करनी पड़ी।

कुल मिलाकर पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन स्थानीय मुद्दा नहीं है। यह एक राष्ट्रीय मुद्दा है जिस पर काफी बहस और सरकारी संरक्षण सहायता और सम्बल की अधिक आवश्यकता है।

पत्र-पिटारी

शब्द रंजन की चाह और चाव

हर पखवाड़े शब्द रंजन की प्रतीक्षा रहती है और मिलने ही इसका पूरा अवलोकन कर लेता हूँ, फिर इसे घर ले जाकर आराम से पढ़ता हूँ। 'स्मृतियों के शिखर' स्तंभ को कभी नहीं छोड़ा। कभी-कभी तो उसमें प्रकाशित संस्मरण का एक से अधिक बार आरोहण किया, ताकि फिर उस छटा को ध्यान से देख सकूं जो आप यादों के गोखड़ों में बैठकर सृजित करते हैं।

स्मृतियों के शिखर के अलावा शब्द रंजन के कागज पर उतरा हर शब्द और सामग्री मैं समय निकालकर चाव से पढ़ता हूँ। इस लेखन में मेवाड़ अँचल के भूले-बिसरे शब्दों का नायाब प्रयोग सदैव मोहित किये रहता है। उसे पढ़ने पर गाँव का बचपन, वातावरण और बाईजी-बाउसा सब याद आ जाते हैं। आप द्वारा उन शब्दों और परम्पराओं को बचाने की चिन्ता व चिन्तन करने वाले अब उंगलियों पर गिने, उतने भी नहीं बचे हैं।

पिछले कुछ माह से मुझे प्राप्त शब्द रंजन का स्वाध्याय आचार्य श्री हस्तीमलजी के सुशिष्य श्री ज्ञानमुनिजी भी कर रहे हैं। उन्हें भी यह बहुत रोचक और ज्ञानवर्धक लग रहा है। उन्होंने मुझे कहा कि मैं बिना भूले शब्द रंजन उन तक अवश्य पहुँचाऊँ ।

शब्द रंजन अर्थ रंजन भी है और भाव रंजन भी। लोक रंजन तो इसकी आत्मा है, जिसके लिए डॉ. भानावत का पूरा जीवन समर्पित रहा है। देवसत्ताओं और देवशक्तियों के जो सन्दर्भ दिये जाते हैं, वे जैनागमों से भी सम्मत हैं जो अनेक अनजाने और रहस्यभरे तथ्यों और प्रसंगों से अवगत कराते हुए लोक जीवन का लौकिक व अलौकिक आलोक बिखेरते हैं।

- डॉ. दिलीप धींग, चैन्नई

प्रो. सतीश मेहता उच्चशिक्षा-सेवा से निवृत्त

प्रो. सतीश मेहता इसलिए भी याद किये जाते रहेंगे कि वे सच्चे, सहज एवं सौम्य एक कर्मशील कर्त्तव्यनिष्ठ आदर्श शिक्षक की तरह हमारे बीच आंखों के तारे बने रहे। महाविद्यालय की शैक्षिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक सभी गतिविधियों में एक बड़े भाई की तरह इन्होंने मुझे सहयोग दिया। इनके साथ जो भी रहा, इनके परिपक्व अनुभवों से लाभान्वित हो आनन्द की अनुभूति की। ये विचार राजकीय महाविद्यालय सुजानगढ़ में 29 जून 2019 को आयोजित प्रो. सतीश मेहता के विदाई समारोह में प्रिंसिपल चतरसिंह दोपासरा ने व्यक्त किये।

एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. प्रेम बापना ने कहा कि विभागीय अध्यक्ष रहे प्रो. मेहता ने विकट परिस्थितियों में अपनी वैचारिक प्रौढ़ता तथा सहज बालसुलभ व्यवहार से छात्रों की हर समस्या का बड़े जिम्मेदार कौशल से निराकरण किया। असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. भीमराम चौधरी ने प्रो. मेहता को एक जिम्मेदार, मिलनसार तथा सकारात्मक सोच वाला साथी बताया और कहा कि अपने बीकानेर में मुझे हर दर्शनीय स्थल से रू-ब-रू बनाये रखा। हर समय जलपान पर मेरी कोई जेब आहत नहीं होने दी।

फिजीकल एज्युकेशन के निदेशक एवं स्टाफ एसोसिएशन के सेक्रेटरी नेमिचन्द शर्मा, डॉ. बी. के. सिंघल, डॉ. शशिकान्त गुप्ता, प्रो. विनीता चौधरी, कार्यालय अध्यक्ष जीवराज सिंह ने प्रो. मेहता के साथ बिताये समय को रेखांकित करते हुए अनेक स्नेहपूर्ण सम्बन्धों की चर्चा की। इस अवसर पर राजकीय महाविद्यालय बीदासर के प्रिंसिपल प्रो. प्रमोद कुमार की विशिष्ट उपस्थिति रही।

आयोजन में प्रो. मेहता की सहधर्मिणी डॉ. कविता मेहता, पुत्र सेमसंग कम्पनी के प्रबन्धक विकल्प मेहता तथा बहूरानी संगम विश्वविद्यालय भीलवाड़ा में विधि की सहायक प्रोफेसर अनिशा मेहता भी उपस्थित थे।

दूसरे दिन बीकानेर में अपने स्थायी निवास पर अल्पाहार आयोजन रखा गया जिसमें वहां के सीबीएम हॉस्पिटल के चाइल्ड स्पेशलिस्ट डॉ. गौरीशंकर जोशी, जैन कॉलेज के प्रिंसिपल अशोक शर्मा, राजस्थान पत्रिका के पूर्व वित्त सहायक प्रबन्धक धर्मवीर सिवाणी तथा उनकी सहधर्मिणी मंजु सिवाणी, अमित कम्प्यूटर के अमित-कल्पना तथा प्रमोद-अनिता नागोरी ने अपनी गरिमामय उपस्थिति के साथ शॉल, श्रीफल से प्रो. मेहताजी का भावभीना अभिनन्दन किया।

उल्लेखनीय है कि प्रो. सतीश मेहता मूलतः उदयपुर संभाग के बड़ीसादड़ी के रहने वाले हैं। उन्होंने बिजनेस मेनेजमेंट तथा एकाउन्टैंसी में एम. कॉम., एमफिल की। वहीं जैन कॉलेज में 30 वर्ष अपनी शैक्षणिक सेवाएं देने के उपरान्त राजकीय उच्चशिक्षा संस्थान बीकानेर के डूंगर कॉलेज तथा महारानी कॉलेज में और फिर सुजानगढ़ के राजकीय महाविद्यालय में अपनी महत्त्वपूर्ण सेवाएं दीं।

इस दौरान हैंडीक्राफ्ट की निर्यात सम्भावनाओं को अपना शोध विषय बनाकर उन्होंने पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की। प्रो. सतीश मेहता प्रख्यात लोककलाविद् डॉ. महेन्द्र भानावत के ज्येष्ठ जमाता हैं।

- डॉ. तुक्तक भानावत

नेहला पर देहला देती दो कथाएं

भारतीय लोककला मण्डल में अनेक लोगों से सम्पर्क में आने का अवसर मिला। वहां काम करने वालों से ही बातचीत के दौरान बहुत सी महत्वपूर्ण सूचनाएं और जानकारियां हाथ लग जातीं। ऐसे ही मौकों का मैंने अच्छा उपयोग किया। यहां प्रस्तुत दो कथाएं 13 मई 1962 को केसरीसिंह आड़ा ने सुनाई जो खोज विभाग में मेरे ही सहभागी थे।

(1) जग जीत्या बेटा काणां, उठ चलै जद जाणां

एक आदमी के काना पुत्र था। वह उसकी शादी के लिए बहुत भटका। कुछ आये भी पर उसे देख सगपण नहीं कर पाये। संयोग से एक व्यक्ति ऐसा मिला जिसकी पुत्री लूली थी। उसने प्रस्ताव रखा तो लड़के वाले ने शीघ्र स्वीकार कर लिया। जल्दी-जल्दी में दोनों ने ही कोई पूछापूछ तथा शर्त वर्त नहीं रखी। दोनों गर्जु थे। एक का लड़का एक आंखी था तो दूसरे की लड़की बिन पांवी।

निश्चित तिथि बारात पहुंची। चंवरी में लड़की लाई गई। लड़के का पिता फूला नहीं समा रहा था कि उसको बहू मिल रही है पर कहीं उसके पुत्र के काना होने का भेद न खुल जाय सो आनन फानन में बोल उठा, जग जीत्या बेटा काणा। उसके यह कहने का आशय अन्य तो कोई नहीं समझ पाये पर लड़की का पिता अवश्य समझ गया।

उसने सोचा कि उसकी पुत्री पांव विहीन है, इसका भेद सामने वाले समधीजी को मालूम नहीं है। दोनों एक-दूसरे के बेटा-बेटी की कमजोरी से अज्ञात थे। लड़की वाले ब्याई ने भी उसके कथन पर तत्काल अपना पव्वा उसी कथन और लहजे में देते कहा-उठ चलै जद जाणां।

(2) देख तिरिया चाला, सिरमुंड और मुंह काला

पति-पत्नी में आये दिन झगड़ा टंटा होता रहता था। परेशान पत्नी ने एक दिन बीमारी का बहाना कर अपने पति से कहा, यदि तुम अपनी मां को मुंह काला किया, सिर मुंडाया मेरे समक्ष हाजिर करो तो मैं जीवित रह सकूंगी अन्यथा रात्रि को मैं प्राण न्यौछावर कर दूंगी। ऐसा आज मुझे एक सपने में किसी ने कहा है।

पति चालाक था। वह किसी तरह उससे पिंड छुड़ाना चाहता था ताकि आये दिन होने वाली माथापच्ची से वह मुक्त हो शान्तिपूर्वक जीवन जी सके।

वह अपनी मां के पास नहीं जाकर पत्नी की मां यानी अपनी सास के पास पहुंचा और बीती घटना कह सुनाई। सास ने सोचा, ऐसा करने से उसकी लड़की की जिंदगानी बच सकती है तो उसे कोई आपत्ति नहीं है। उसने अपना मुंह काला कर, सिर मुंडवाया और लड़की के घर पहुंची। वह उसे पहचान नहीं पाई कि उसकी मां है, सास नहीं सो उसे देखते ही उसने अपने मूर्ख पति से कहा, देख तिरिया चाला, सिर मुंडा मुंह काला।

पति उससे भी तेज था। उसने तत्काल जवाब दिया, देख बंदे की फेरी, अम्मा तेरी है कि मेरी।

दोस्ती लंदन के लिए चंडी पाठ

मेवाड़ के महाराणा स्वरूपसिंह ने अपने समय में चांदी का सिक्का चलाना चाहा ताकि उनके समय को लोग याद कर सकें और इतिहास के पन्नों में

उनका नाम अमर हो सके। इसके लिए अनुमति प्राप्त करने बाबत् प्रीवी कौंसिल लंदन को पत्र लिखा गया। पत्र पहुंचने पर अधिकारियों द्वारा सलाह मशविरा कर तय किया गया कि मेवाड़ राजघराने से दोस्ती कागजों की लिखा-पढ़त में तो है ही पर सिक्के के रूप में नहीं है लेकिन इसकी आवश्यकता भी क्या है अत: इस प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया गया।

महाराणा को यह बात ठीक नहीं लगी। उनका स्वाभिमान जाग उठा पर कोई चारा नहीं था। सरदारों ने राय दी कि कोई भी चीज असंभव नहीं है। इसके लिए ठोस उपाय खोजना चाहिये। महाराणा के एक मर्जीदान ने राय दी कि अन्नदाता, यदि किसी तांत्रिक से कोई टोटका करवाया जाय तो अपने को सफलता मिल सकती है।

महाराणा की स्वीकृति पाकर शाहपुरा ठिकाने के पास के फूलिया गांव के प्रसिद्ध तांत्रिक सीतारामदास को हाजिर किया गया। सीतारामदास के कहे अनुसार उनसे एक लाख यक्षचंडी का पाठ करवाया गया और पुन: अनुमति के लिए उसकी आवश्यकता महसूस करने बाबत् लिखा गया।

पत्र रानी विक्टोरिया के समक्ष पेश किया गया। रानी ने कहा कि अपने राज्य में महाराणा सिक्का चलाना चाहते हैं तो अपने को क्या आपत्ति हो सकती है। अब रही बात यह कि अपना सौलह आनी सिक्का है जबकि वे सत्रह आने का चलाना चाह रहे हैं। ऐसी स्थिति में सुझाव दिया गया कि सिक्के के एक ओर दोस्ती लंदन तथा दूसरी ओर चित्रकूट उदयपुर लिखा जाय। स्वीकृतिमूलक पत्र पाकर महाराणा स्वरूपसिंह बड़े प्रसन्न हुए फलस्वरूप अपने यहां की टकसाल में स्वरूपशाही सिक्का, टंच सत्रह आनी चांदी का, ढाल कर जारी किया।

श्यामसुंदर व्यास (90) ने बताया कि बागोर की हवेली स्थित बाणनाथ मंदिर में महाराणा स्वरूपसिंह द्वारा चलित यह सिक्का पूजान्तर्गत सुरक्षित है। वर्तमान में मंदिर की सेवा-पूजा का कार्य आमेटा शिवस्वरूप व्यास के अधीन है। महाराणा द्वारा चलित यह सिक्का सरूपशाही कलदार के नाम से आम जनता में बड़ा लोकप्रिय हुआ। रानी विक्टोरिया की महती कृपा के फलस्वरूप महाराणा ने भी उसकी यादगार हेतु एक बाग में विक्टोरिया हॉल बनवाया और विक्टोरिया की एक भव्य और कलात्मक मूर्ति स्थापित की। बाद में जब देश आजाद हुआ, विक्टोरिया की प्रतिमा वहां से हटवाकर विक्टोरिया हॉल के गलियारे में रखवा दी गई और उसकी बजाय महात्मा गांधी की प्रतिमा स्थापित की गई। विक्टोरिया हॉल का नाम सरस्वती पुस्तकालय कर दिया गया और वह बाग भी महाराणा सज्जनसिंह के समय सज्जन निवास बाग था जो बाद में गुलाबबाग के नाम से जाना गया।

मौन समारोह

हर व्यक्ति व संस्था के अपने कार्य करने के अलग-अलग तौरतरीके होते हैं। इनमें से कुछ कार्य ऐसे अनूठे होते हैं जो चर्चा का विषय बन जाते हैं। समाजसेवी संस्था विनोबा सन्देश द्वारा यहां आयोजित एक अनूठे मौन समारोह की याद स्वाभाविक है।

20 अप्रेल 1990 को आयोजित इस समारोह में किसी भी प्रकार की चर्चा, भाषण आदि पर पूर्णतया प्रतिबन्ध था। इस संक्षिप्त समारोह में मुख्य अतिथि पत्रिका के स्थानीय सम्पादक तथा प्रसिद्ध व्यंग्यकार व पत्रकार ओम शर्मा थे जिन्होंने शॉल ओढ़ाकर मेरा सम्मान कर दो हजार रूपये नगद व श्रीफल भेंट किया। समारोह के प्रारम्भ में विनोबा सन्देश के संयोजक मनोहरलाल सरूपरिया ने मुख्य अतिथि, सम्मानित पत्रकार तथा निर्णायकों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। इस अवसर पर अपने स्वागत भाषण के रूप में वितरित पर्चे में उन्होंने कहा कि संस्था का उद्देश्य विनोबाजी के सन्देश का प्रचार-प्रसार करना तथा जीवन पद्धति में उन आदतों को शुमार करना है जिनसे एक-दूसरे के प्रति भाईचारा बढ़े। इसके लिए संस्था किसी भी जरूरतमंद की आर्थिक सहायता के बजाय स्वावलम्बन के लिए प्रेरित करती है तथा समाज में व्याप्त विषमताओं एवं अनियमितताओं को दूर करने के लिए प्रयासरत रहता है। भ्रष्टाचार, झूठफरेब एवं मुनाफाखोरी के विरूद्ध हमारी लड़ाई जारी है चाहे गलत कार्य करने वाला कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हों। सरूपरियाजी ने कहा कि संस्था ने भटके हुए युवाओं को समाज में पुनर्प्रतिष्ठित करने एवं उन्हें अपनी बुराइयों से निजात दिलाने का ठोस प्रयास किया है।

इस अवसर पर नगर की विभिन्न स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने विनाबाजी के चित्र पर पुष्पाहार अर्पित किये। समारोह का पूरा कार्यक्रम एक बोर्ड पर लिख दिया गया था। इस बोर्ड के रिक्त स्थान पर मुख्य अतिथि शर्मा ने अपनी लिखित अभिव्यक्ति इन शब्दों में की -'यह कार्यक्रम अत्यन्त मौलिक, गरिमापूर्ण तथा आल्हादकारी रहा, आयोजक साधुवाद के पात्र हैं। हार्दिक शुभकामनाएं एवं धन्यवाद।'

अपने सम्मान के उत्तर में मैंने अपनी अभिव्यक्ति वहां लगाये गये ब्लेक बोर्ड पर यह लिखकर व्यक्त की-

'मौन मधुर, ममता, समता का यह अद्भुत आनन्द।
अजब गजब में खोया यारों मुखरित हूं हर चन्द।'

उदयपुर पत्रकार परिषद के महामंत्री सुभाष गदिया ने सभी पत्रकारों की ओर से इस आयोजन के प्रति आभार व्यक्त किया। सम्मान के लिए पत्रकार का चयन करने वाले निर्याणकों में सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी जीतेन्द्र माथुर, आकाशवाणी संवाददाता एम. पी. शकुनि तथा पत्रकार परिषद् राजस्थान के महामंत्री विष्णु शर्मा 'हितैषी' थे।

सूअर का शिकार और घोड़े का खुर

उदयपुर में सेंटपॉल स्कूल के पीछे अभयबाग में पांच अगस्त 2004 को बावजी निर्भयसिंहजी ने बताया कि उनके पितामह का घोड़ा बड़ा समझदार था। शिकार के समय घोड़े को एकबार सूअर के पीछे कर देने पर कोई निर्देश देने की जरूरत नहीं होती। वह शिकार के पीछे-पीछे चलता रहेगा जब तक कि उसका काम तमाम नहीं कर दिया जाय। जब शिकार हार कर ढीला पड़ जाता तो सवार उसे अपने साथ रखे हथियार से मार देता। कई बार घोड़ा स्वयं ही अपने पांव से, खुरों से रगड़ कर शिकार को मसल देता।

सूअर सबसे खतरनाक जानवर है। शेर तथा अधवेसरे को भी वह पटकी दे देता है। जख्मी हो जाने के बाद तो उसका खतरा अधिक बढ़ जाता है। वह इरादे का पक्का होता है। संकट में आने पर वह धैर्य नहीं खोकर सहज पराजय स्वीकार करने की बजाय या तो मरमिटता है या मारकर ही दम लेता है। जख्मी होने पर अपनी बढ़ती ताकत के कारण वह हाथी के पैरों में घुसकर उसे भी फाड़ देता है। सूअर के जोश में आने पर उसके शरीर के बड़े-बड़े बाल गन्ने की तरह खड़े हो जाते हैं।

बावजी ने बताया कि एकबार उनके पितामह ने रींछ के शिकार के लिए घोड़ा दौड़ाया। रींछ बड़ा ताकतवर था। घोड़ा उसके पीछे निडर हो भागा। अचानक रींछ के पीछे चल रहा घोड़ा गिर पड़ा। उसके साथ पितामह भी गिर पड़े। घोड़ा तो तत्काल उठ खड़ा हो गया पर पितामह नहीं उठ पाये। वे बड़ी मुश्किल से रेंगते हुए एक पत्थर पर जा बैठे। घोड़ा खड़ा-खड़ा उन्हें देख रहा था। थोड़ी देर बाद घोड़ा उनके पास गया। उसने उनके आसपास अपना मुंह फिराया। बासाहब ने घोड़े को पकड़ उठना चाहा। इस पर घोड़े ने सहयोग कर उन्हें अपनी पीठ पर बिठा लिया।

रींछ का शिकार एकबार खुद निर्भयसिंहजी ने किया। उनके साथ वाले ने जोर की बन्दूक दागी। रींछ के बन्दूक लगते ही वह जोर-जोर से चिल्लाया जैसे मनुष्य रो रहा हो। रींछ का शिकार शेर से भी अधिक खतरनाक होता है। बावजी समझे कोई आदमी मर गया है लेकिन ज्योंही उसने दूसरी बन्दूक दागी तो वे समझ गए कि कोई शिकार मारा गया है।

घोड़े के खुर में यह खासियत होती है कि ब्रह्मांड में जितनी भी ऊर्जा है वह खुर खींचकर अपने में समाहित कर लेता है। खुर तो बकरी, गाय, बैल और गधे के भी होते हैं पर यह खासियत उनमें नहीं होती। इसीलिए घोड़े के नाल लगाते हैं ताकि नाल में वह सारी ऊर्जा समाविष्ट हो जाय। इसीलिए घोड़े की नाल की प्राप्ति के लिए लोग भटकते रहते हैं। यह नाल काले घोड़े की होनी चाहिये। इस नाल की अंगूठी बनाकर पहनी जाती है। यह अंगूठी भी बिना नाल को गर्म किये बनाई जाती है। घोड़ा कभी बैठता नहीं है। यदि कभी बैठ भी जाय तो वह ठीक नहीं समझा जाता।

महाराणा प्रताप के पास जो भाला था वह औसत भाले से बड़ा था। वजन में इतना हल्का कि दो किलो से अधिक नहीं था पर उससे प्रताप ऐसा वार करते कि जैसे सवा मण का भाला घुस गया हो। एकबार प्रताप को सूचना मिली कि चावण्ड गांव में एक शेर प्रतिदिन आकर एक गाय का भक्षण कर जाता है। प्रताप ने अपने पंजे में बाघनखा पहना और शेर का काम तमाम किया। बाघनखा पहना हाथ शेर के मुंह में डाल दिया जाता है। वह मुंह में जाकर खुलता है और शिकार को कांटों जैसी असहनीय पीड़ा देता है।

लेकिन शेर तो शेर था। मरते-मरते भी वह अपनी कारगुजारी कर गया। उसने प्रताप की आंतड़ियां तोड़ दीं जिससे दो दिन बाद ही प्रताप का निधन हो गया। इसकी सूचना लियाकत हुसैन ने अकबर को दी। जब अकबर को यह खबर मिली तो उसने अपने सिर पर हाथ दे बड़ा अफसोस व्यक्त किया। इस पर डिंगल कवि दुरसा आढ़ा ने लिखा- 'अस दागो अणदाग.....।'

हल्दीघाटी की सिंदूरी बिंदी :

जगदीश चौक से भटियाणी चौहट्टा के उतार में रह रहे अमरसिंह भाटी ने बताया कि महाराणा सांगा उनके पूर्वजों को जैसलमेर से यहां लाये। भाटीजी के वंशज दोलाजी, गुलाबजी, गोपालजी हल्दीघाटी युद्ध में प्रताप की ओर से लड़े और खेत रहे।

हल्दीघाटी दिवस 21 जून पर प्रतिवर्ष ही भाटीजी हल्दीघाटी जाते और वहां खेत रही आत्माओं का दीप-पूजन करते। अगरबत्ती चढ़ाते। यों अपने घर में वे प्रतिदिन हल्दीघाटी की माटी का पूजन कर अपने मस्तक पर चढ़ाते। उनकी पत्नी अंबाजी का सिंदूर लाकर उसके साथ हल्दीघाटी की माटी पीसकर बिंदी लगाती।

अरथूना में कभी नौ हजार मंदिर थे

बांसवाड़ा से साठ किलोमीटर दूर अरथूना गांव किसी समय अपने मन्दिरों के लिए बहुत दूर-दूर तक जाता था। ऐसी प्रसिद्धि है कि यहां प्रतिदिन ही मन्दिर में निर्माण कार्य चलता रहता था इसीलिए यहां कुल नौ हजार मन्दिरों का अस्तित्व था। इन मन्दिरों का अस्तित्व आज भी देखने को मिलता है। पहले यहां बहुत बड़ी नगरी बसी हुई थी। बारह कोस में फैली यह नगरी प्रलय आने के कारण दब गई। यहां शिव मन्दिरों का अस्तित्व रहा।

ऐसी प्रसिद्धि है कि दौलतगढ़ में दौलत का दीपक जलता था जिसका प्रकाश अरथूना में पड़ता था। यहां मूर्तियां बनाने वाले कारीगरों को मजदूरी में सोना दिया जाता था। एक-एक कारीगर के पास 25-25 किलो तक सोना मिलता। दौलतगढ़ में पारस से बड़ी मात्रा में सोना बनाया जाता था। कला, संस्कृति एवं पुरातत्व मंत्री श्रीमती बीना काक ने इस स्थल का अवलोकन कर यहां संग्रहालय स्थापित करने का आश्वासन दिया और कहा कि यहां का मन्दिर शिल्प खुजराहो की स्थापत्य कला की समानता लिए है। श्रीमती काक ने प्राचीन एवं पुरातात्विक महत्व के स्थानों पर शोध करने वाले छात्रों को सरकार द्वारा छात्रवृत्ति प्रदान करने की घोषणा की। इस अवसर पर पर्यटन राज्यमंत्री डॉ. गिरिजा व्यास भी थीं। पूर्व मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी ने दोनों मंत्रियों को अरथूना के पुरातात्विक महत्व की विशेष जानकारी दी।

- म. भा.

लैड रोवर और रैपिड रेस्पॉन्स में भागीदारी

उदयपुर। जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने आपदाओं के दौरान समय पर मदद उपलब्ध कराने और समाज को सकारात्मक रूप से प्रभावित करने के लक्ष्य के

साथ रैपिड रेस्पॉन्स के साथ गठबंधन किया है। रैपिड रेस्पॉन्स एक एनजीओ है, जिसे आपदा प्रबंधन और राहत में विशेषज्ञता प्राप्त है। जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने इस मानसून रैपिड रेस्पॉन्स को एक खासतौर से तैयार लैंड रोवर डिस्कवरी स्पोर्ट उपलब्ध कराया है। इसका इस्तेमाल एक ईमरजेंसी रेस्पॉन्डर के रूप में राहत एवं मेडिकल सहयोग उपलब्ध कराने और भारत में प्राकृतिक आपदाओं में संकटग्रस्त समुदाओं को भोजन एवं राहत सामग्री वितरित करने के लिये किया जायेगा।

जगुआर लैंड रोवर इंडिया लि. (जेएलआरआइएल) के प्रेसिडेंट एवं मैनेजिंग डायरेक्टर रोहित सूरी ने कहा कि भारत में जगुआर लैंड रोवर के 10 साल पूरे होने के अवसर पर प्राकृतिक आपदाओं के पीड़ितों को मदद करने के लिये रैपिड रेस्पॉन्स को एक लैंड रोवर डिस्कवर स्पोर्ट उपलब्ध कराने पर गर्व हो रहा है। रैपिड रेस्पॉन्स के सीईओ मोहम्मद फारूख ने कहा कि भारत दुनिया में एक महत्वपूर्ण देशों में से एक है, जिस पर आपदाओं का खतरा मंडराता रहता है। रैपिड रेस्पॉन्स में, हमारा लक्ष्य प्राकृतिक आपदाओं के पीड़ितों के लिये तत्काल, प्रभावी एवं स्थायित्वपूर्ण सहयोग उपलब्ध कराना है।

किआ सेल्टोस का वर्ल्ड प्रीमियर

उदयपुर। दुनिया के आठवें सबसे बड़े ऑटो निर्माता, किआ मोटर्स ने भारत के लिए अपनी पहली कार, किआ सेल्टोस का वर्ल्ड प्रीमियम किया। देश में विकसित सेल्टोस में आधुनिक और स्टाईलिश डिज़ाईन तथा खूबसूरत एवं विशाल इंटीरियर हैं। इस वाहन में भारत, दुनिया और सेगमेंट के अनेक प्रथम गुण एवं विश्वस्तरीय सुरक्षा विशेषताएं हैं, जिसके कारण यह वाहन इस सेगमेंट को परिभाषित कर खुद की एक अलग पहचान स्थापित करेगा। किआ सेल्टोस में स्मार्टस्ट्रीम है, जो हाई एफिशियंसी एवं शक्तिशाली परफॉर्मेंस के लिए विकसित थर्ड जनरेशन पॉवरट्रेन है। सर्वप्रथम भारत के लिए तैयार इस वाहन में विश्वस्तरीय डिज़ाईन, क्वालिटी एवं विशेषताएं हैं और यह 2019 की चौथी तिमाही से पूरी दुनिया के बाजार में मिलने लगेगी।

किआ मोटर्स कॉर्पोरेशन के सीईओ एवं प्रेसिडेंट श्री हान-वू पार्क ने कहा कि भारत किआ मोटर्स के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण बाजार है और यह हमारे वैश्विक फुटप्रिंट के विस्तार में अहम भूमिका निभाएगा। भारत एक विविध देश है और यहां पर ड्राईविंग की परिस्थितियां भी भिन्न हैं। इसलिए यह आवश्यक था कि यहां ऐसा वाहन प्रस्तुत किया जाए, जो हर तरीके से श्रेष्ठ हो। किआ सेल्टोस भारतीय ग्राहकों और उनकी जरूरतों को ध्यान में रखकर बनाई गई है। विश्व में सेल्टोस का वर्ल्ड प्रीमियर किआ के लिए एक महत्वपूर्ण मापदंड होगा।

युगांडा में सर्जिकल कैम्प आयोजित

उदयपुर। स्वास्थ्य मंत्रालय, युगांडा और फोर्टपोर्टल हॉस्पिटल के सहयोग से नारायण सेवा संस्थान ने युगांडा के दिव्यांग बच्चों को चिकित्सा सहायता और अन्य मदद देने के लिए सर्जिकल कैम्प आयोजित किया। कैंप का उद्देश्य 100 से अधिक बच्चों को करेक्टिव सर्जरी, कृत्रिम अंग, सीपी चेयर, व्हीलचेयर और ऑपरेशन के बाद अन्य सहायता प्रदान करना था।

संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने मानवता की सेवा को सच्ची सेवा बताते हुए युगांडा के स्वास्थ्य मंत्रालय, स्वास्थ्य मंत्री, स्वास्थ्य से जुड़े विभागों के निदेशकों सहित मुलगो, फोर्टपोर्टल और होइमा अस्पताल का आभार व्यक्त किया।

राजेश अग्रवाल के नेतृत्व वाली एनएसएस युगांडा टीम जुलाई 2016 में अपने गठन के बाद से दिव्यांगों को मुफ्त और गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सेवाएं प्रदान करने के लिए काम कर रही है। अब तक एक हजार से अधिक दिव्यांगों को इसका लाभ दिया जा चुका है। एनएसएस युगांडा को भारतीय मूल के लोगों का अच्छा समर्थन हासिल है।

कोलगेट हाइजिन ब्रांड बना

उदयपुर। ओरल केयर में मार्केट लीडर कोलगेट-पामोलिव (इंडिया) लि. को टीआरए ब्रांड ट्रस्ट इंडिया स्टडी ने भारत का सबसे भरोसेमंद नंबर 1 ओरल हाइजिन ब्रांड घोषित किया है। टीआरए ब्रांड ट्रस्ट इंडिया स्टडी रिपोर्ट 2019 में भारत के 1000 टॉप ब्रांड्स को शामिल किया गया। कोलगेट ने लगातार नौंवे साल गौरवमय यह स्थान कायम रखा है। कोलगेट-पामोलिव (इंडिया) लि. के प्रबंध निदेशक इसाम बचलानी ने कहा कि हमें खुशी है कि उपभोक्ताओं ने कोलगेट को फिर देश का नंबर 1 सबसे भरोसेमंद ओरल हाइजिन ब्रांड का सम्मान दिया है। टीआरए ब्रांड ट्रस्ट की भारत से जुड़ी नवीनतम रिपोर्ट 2019 में कोलगेट को इस सम्मान से नवाजा गया है। हम उपभोक्ताओं की बदलती जरूरतों के अनुसार सर्वश्रेष्ठ ओरल केयर मुहैया करवाते रहेंगे और उन समुदायों के लिए योगदान की दिशा में प्रयास करेंगे। टीआरए ब्रांड ट्रस्ट रिपोर्ट के नौंवे संस्करण में भारत के 16 शहरों में 2,315 कंज्यूमर-इंफ्लूयेंसर रिस्पोंडेंट्स से राय ली गई। यह आंकड़े दिसंबर 2018 से मार्च 2019 के बीच कंप्यूटर-एडिड-पर्सनल-इंटरव्यू के माध्यम से किए गए।

कैस्ट्रॉल सुपर मेकैनिक कॉन्टेस्ट में रिकॉर्ड पंजीकरण

उदयपुर। देश की सबसे बड़ी यांत्रिक-जांच और कौशल पहल, कैस्ट्रॉल सुपर मेकैनिक कॉन्टेस्ट की लोकप्रिय वार्षिक प्रतियोगिता के तीसरे सत्र में इस वर्ष सवा लाख से ज्यादा मेकैनिकों की रिकॉर्ड तोड़ भागीदारी दिखाई दी जो पिछले साल से 15 फीसदी ज्यादा है। कैस्ट्रॉल इंडिया लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर ओमर डॉर्मन ने कहा कि कैस्ट्रॉल सुपर मेकैनिक कॉन्टेस्ट पूरे भारत में कार और बाइक मेकैनिकों को कई प्रतियोगी चरणों के साथ एक मंच प्रदान करके उनका कौशल परीक्षण करता है, जहां प्रतिभागियों को मोटर वाहन तकनीकों और लुब्रिकेंट उद्योग का व्यापक ज्ञान मिलता है। इसको एक अद्भुत राष्ट्रीय प्लेटफॉर्म माना जाता है, जो देश भर में मेकैनिकों को अपना हुनर दिखाने, पहचान और सम्मान अर्जित करने का अवसर देता है। देश के 20 शहरों में मास्टर क्लास सत्र आयोजित किए गए, जहां 6000 से अधिक मेकैनिक प्रशिक्षित हुए।

प्रो. भाणावत राष्ट्रीय लेखांकन टैलेंट सर्च परीक्षा के राष्ट्रीय कोऑर्डिनेटर मनोनीत

उदयपुर। भारतीय लेखांकन परिषद की पांच सदस्ययी कमेटी ने मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के लेखांकन एवं सांख्यिकी के प्रो. शूरवीरसिंह भाणावत को राष्ट्रीय लेखांकन टैलेंट सर्च परीक्षा का राष्ट्रीय कोऑर्डिनेटर मनोनीत किया है। यह परीक्षा देश के 50 केंद्रों पर प्रतिवर्ष आयोजित होती है। इसका मुख्य उद्देश्य लेखांकन के क्षेत्र में टैलेंटेड छात्रों की खोज करना और उनको हर वर्ष आयोजित होने वाले लेखांकन सम्मेलन में सम्मानित करना है।

कमेटी सदस्यों में भारतीय लेखांकन परिषद के महासचिव प्रो. साइमन यूनिवर्सिटी ऑफ केरला, सीनियर प्रेसिडेंट प्रो. जी. सोरल सुखाड़िया यूनिवर्सिटी, प्रो. के. इरेशी बैंगलोर यूनिवर्सिटी, प्रो मुनिराजू बैंगलोर यूनिवर्सिटी एवं प्रो. जे. के. जैन एचएस गौर यूनिवर्सिटी सागर शामिल थे।

करिकुलम इम्प्लीमेंटेशन सपोर्ट प्रोग्राम आयोजित

उदयपुर। देश भर के मेडिकल कॉलेजों में अगस्त से शुरू होने वाले इसी सत्र के पाठ्यक्रम में एमसीआई ने बदलाव किया है।

पीआईएमएस में इसके इम्प्लीमेंटेशन के लिए 24 से 26 जून तक तीन दिवसीय करिकुलम इम्प्लीमेंटेशन सपोर्ट प्रोग्राम आयोजित किया गया। इसमें अहमदाबाद के रीजनल सेंटर से ट्रेनिंग लेकर आये पीआईएमएस के फेकल्टी मेंबर्स ने ट्रेनिंग दी जिसमें प्रोफेसर व अन्य मेडिकल एजुकेशन यूनिट के मेंबर्स शामिल हैं। ट्रेनिंग में 24 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। ट्रेनिंग में बताया गया कि पहले वर्ष से ही मेडिकल स्टूडेंट्स को स्किल, एटीट्यूड, वेल्यूज और रेस्पॉन्सिवनेस पर फोकस करवाना है। मुख्य अतिथि पीआईएमएस की एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर श्रीमती शीतल अग्रवाल एवं एमसीआई ऑब्जर्वर डॉ. नीरज महाजन थे।

वर्ल्ड कप की सूक्ष्म कलाकृति बनाई

उदयपुर। स्वर्ण शिल्पकार इकबाल सक्का ने हाल में चल रहे वर्ल्ड कप के मद्देनजर 0.010 मिलीग्राम वजन एवं 1 मिमी ऊंचाई की स्वर्ण निर्मित वर्ल्ड कप की कलाकृति बनाई है। इसके साथ ही सोने का सूक्ष्म बल्ला व बॉल भी बनाए हैं।

सक्का के अनुसार सूक्ष्मदर्शी लेन्स की मदद से देखी जाने वाली एवं सूई के छेद पर सजाई इस कलाकृति में हैण्डल पर छोटी की ग्रीप लगे बल्ले की ऊंचाई 1 मिमी, चौड़ाई 0.2 मिमी व बॉल की गोलाई 0.5 मिमी है।

जिंक की पांच इकाइयों को भामाशाह पुरस्कार

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक की पांच इकाइयों चंदेरिया लेड जिंक़ स्मेल्टर, राजपुरा दरीबा कॉम्प्लेक्स, जावर माइंस, रामपुरा आगुचा खान और देबारी स्मेल्टर को शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए राज्यस्तरीय 25वें भामाशाह सम्मान समारोह में पुरस्कृत किया गया।

समारोह में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, उच्च शिक्षामंत्री भंवरसिंह भाटी, शिक्षा राज्यमंत्री गोविन्दसिंह डोटासरा, शासन सचिव सुभाष गर्ग ने चंदेरिया लेड जिंक़ स्मेल्टर के सीएसआर हेड विशाल अग्रवाल, शिव भगवान, दरीबा स्मेल्टिंग कॉम्प्लेक्स के हेड सीएसआर अभय गौतम, रामपुरा आगुचा खान के हेड सीएसआर दलपतसिंह चौहान, रूचिका नरेश चावला, जावर माइंस के साइट प्रेसिडेंट बलवंतसिंह राठौड़, सीएसआर हेड अरूणा चीता, नैरूति सांघवी, शुभम गुप्ता तथा देबारी स्मेल्टर के सीएसआर हेड बुद्धिप्रकाश को प्रदान किया।

वंडर सीमेंट को भामाशाह पुरस्कार

उदयपुर। वंडर सीमेंट लि., आर. के. नगर, निम्बाहेड़ा को शिक्षा के क्षेत्र में किये गये उल्लेखनीय योगदान हेतु बिड़ला ऑडिटोरियम, जयपुर में मुख्यमंत्री के मुख्य आतिथ्य में आयोजित 25वें राज्यस्तरीय सम्मान समारोह में 'भामाशाह सम्मान' प्रदान किया गया। कम्पनी के उपाध्यक्ष (वाणिज्य) नितिन जैन, एवं प्रबन्धक (सी.एस.आर.) हेमेन्द्रसिंह झाला को राज्यमंत्री-शिक्षा विभाग (प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा) गोविन्दसिंह डोटासरा, राज्य मंत्री-उच्च शिक्षा विभाग (स्वतंत्र प्रभार) भंवरसिंह भाटी, प्रमुख शासन सचिव (स्कूल शिक्षा, भाषा तथा पुस्तकालय विभाग) डॉ. आर वेंकटेश्वरण, एवं निदेशक (माध्यमिक शिक्षा) नथमल डिडेल ने यह सम्मान प्रदान किया।

इस अवसर पर नितिन जैन ने कहा कि शिक्षा को प्रोत्साहन एवं विद्यालयों का हर क्षेत्र में विकास वंडर सीमेंट लि. की प्राथमिकता रही है। कंपनी द्वारा शैक्षणिक विकास के अन्तर्गत राजकीय विद्यालयों की 5वीं एवं 8वीं बोर्ड परीक्षाओं में उपखण्ड स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले मेधावी छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत करना, श्रेष्ठ परिणाम प्रस्तुत करने वाले राजकीय विद्यालयों को सहयोग एवं सम्मानित करने सहित वृक्षारोपण, पेयजल सुविधा, कम्प्यूटर उपलब्ध करवाने के कार्य प्रमुखता से करवाये जा रहे हैं।

मैक्सिस टायर्स की डीलर्स मीट

उदयपुर। मैक्सिस इंडिया ने उदयपुर में अपने डीलर्स से मुलाकात की। इसमें उदयपुर के अलावा डूंगरपुर, बांसवाड़ा, राजसमंद, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ तथा प्रतापगढ़ के 74 डीलर्स ने हिस्सा लिया।

मैक्सिस इंडिया के मार्केटिंग हेड बिंग-लिन वू ने कहा कि उदयपुर हमारे लिए प्राथमिकता वाला बाजार है और इस क्षेत्र में अपनी उपस्थिति बढ़ाने को लेकर हम प्रतिबद्ध हैं। मैक्सिस ने भारतीय बाजार में शानदार शुरुआत की है और इसे देखते हुए हाल में हीरो मोटाकॉर्प के साथ ओईएम गठजोड को लेकर हम उत्साहित हैं। डीलर्स की अगुआई उदयपुर में मैक्सिस टायर्स के डिस्ट्रीब्यूटर मैसर्स शिवम टायर्स के रवि सिंघल और अनुरोध गर्ग ने की और मैक्सिस की ओर से मिलने वाली 5 साल की अनकंडीशनल वारंटी और एक साल के फ्री रिप्लेसमेंट की जानकारी दी गई जिसकी डीलर्स ने जमकर तारीफ की।

मैक्सिस इंडिया के असिस्टेंट वाइस प्रेसिडेंट, सर्विस, पो-यू (जेरेमी) सू ने कहा कि दुनियाभर में मैक्सिस को अपनी शानदार गुणवत्ता और कस्टमर सर्विस सपोर्ट के लिए जाना जाता है। भारत एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था है और हमारा प्रयास यहां के दोपहिया ग्राहकों को विश्वस्तरीय उत्पाद एवं सुविधा मुहैया कराना है। बैठक में अपने मौजूदा और भविष्य में जुड़ने के इच्छुक लोगों से मैक्सिस की सर्वोच्च सर्विस क्वालिटी के बारे में बात करने का मौका मिला।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 100 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/
आदिवासी जीवनधारा	395/
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/
राजस्थान के लोकनृत्य	200/
गुजरात के लोकनृत्य	200/
राजस्थान के लोक देवी देवता	150/
भारतीय लोकमाध्यम	75/
अजूबा भारत	200/
पाबूजी की पड़	50/
लोककलाओं का आजादीकरण	250/
उदयपुर के आदिवासी	250/
निर्भय मीरां	250/
रंग रूड़ो राजस्थान	100/
कुंवारे देश के आदिवासी	100/
जन्हें मैं जानता हूं	100/
जैन लोक का पारदर्शी मन	150/
गवरी	60/
राजस्थान के थापे	150/
कठपुतली	60/
जनजातियों में गाथा गायकी	350/

राजस्थान जैसा आतिथ्य दुनिया में कहीं और नहीं : संजीव कपूर

उदयपुर। राजस्थान का पर्यटन विश्वभर में अपनी खास पहचान रखता है जिसके ध्येय वाक्य 'पधारो म्हारे देश' को आगे लाकर विश्वपटल पर पहुंचाने के लिए प्रत्येक राजस्थानी को और अधिक प्रयास करने होंगे क्योंकि भारत की पहचान कई जगह राजस्थान के आतिथ्य से होती है। यह बात जानेमाने सेलिब्रिटी शैफ संजीव कपूर प्रेसवार्ता में कही। वे शौर्यगढ़ रिसोर्ट एवं स्पा द्वारा आयोजित फूड शो में शिरकत करने उदयपुर आए थे।

संजीव कपूर ने शौर्यगढ़ रिसोर्ट एवं स्पा द्वारा आयोजित फूड शो की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह अपनेआप में अनूठा उदाहरण है जो लोगो को प्रोत्साहन और प्रेरणा देता है।

संजीव कपूर ने राजस्थान के प्रसिद्ध व्यंजन दाल-बाटी-चूरमे को लाजवाब बताते हुए कहा कि यह व्यंजन एक यूनिक कॉम्बीनेशन है जिसे आसानी से परोसे जाने के लिए नवाचार करना चाहिए। उन्होंने दालबाटी के कांसेप्ट को स्वयं द्वारा 'मोतियां बाटी' का नाम देकर उसमें स्वाद को बरकरार रखते हुए इसका छोटा रूप बनाने की बात कही।

उन्होंने चाईनिज़ फूड के फेमस होने के सवाल पर कहा कि भारत का स्वाद नहीं बदला है सिर्फ शैली बदली है जिसमें मसालों और बनाने का तरिका भारतीय ही है।

बीबीसी गुड फूड के सीईओ एडिटर शफकत अली ने कहा कि शौर्यगढ़ रिसोर्ट और स्पा में आयोजित फूड शो स्थानीय प्रतिभाओं को अवसर प्रदान करने के लिए बेहतरीन प्लेटफार्म है।

शौर्यगढ़ रिसोर्ट एवं स्पॉ के जनरल मैनेजर रूपम सरकार ने बताया कि फूड शो के कॉन्सेप्ट को उदयपुराईट्स खासा पसंद कर रहे है। इसी कारण इस बार उदयपुर स्टार शैफ चैलेंज में 68 प्रतिभागियों और 10 से अधिक जानेमाने होटल्स ने सहयोग दिया है जो कि एक उपलब्धि है।

वनश्री राठौड़ ने जीता उदयपुर स्टार शैफ 2019 का खिताब

उदयपुर। लगातार चौथी बार शौर्यगढ़ रिसोर्ट और स्पा द्वारा आयोजित फूड शो में वाणिज्य की छात्रा वनश्री राठौड ने अपने हाथों के जादूई स्वाद से सेलिब्रेटी शैफ का दिल जीतकर उदयपुर स्टार शैफ 2019 का खिताब अपने नाम कर लिया। वनश्री ने उदयपुर के चयनित 41 शैफ में से टॉप टेन में स्थान बनाकर यह खिताब जीता। कार्डियेक सर्जन डॉ. अनिता सिंघी एवं आईटी में बीटेक योग्यता रखने वाली अक्सा सिद्दीकी ने रनरअप का खिताब हासिल किया।

यंग शेफ चेलेंज में होटल द अनंता की शैफ अश्विनी शर्मा और शैफ प्रियंका विजेता रही। उदयपुर यंग शैफ के रनरअप फर्न रेजीडेंसी के शैफ शांति पटेल और शैफ नारायण सालवी रहे। मास्टर बार टेण्डर चैलेंज 2019 के विजेता होटल द अनंता के राहुल कुमावत और रनरअप ताज अरावली के अनिल कुमार रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि बीबीसी गुड फूड के सीईओ एडिटर शफकत अली, जानेमाने सेलिब्रेटी शैफ संजीव कपूर, डॉ. पी. सुंदरराजन, अशर्फी माचिसवाला, चिराग मारू, संदीप मारू, ट्विंकल गोकानी, नुपूर जोशी, दयानंद रामकृष्णन, रिचा जोहरी, योगेश उत्तेकर, राखी वासवानी, शतभी बासु एवं शैफ सुधीर पाई, एंटोनी लुईस ने दीप प्रज्जवलित कर किया।

जनरल मैनेजर रूपम सरकार ने बताया कि फूड शो के समापन समारोह में लाईफ टाईम एचीवमेंट का अवार्ड शैफ डॉ. पी. सुंदरराजन और सुश्री अशर्फी माचिसवाला को प्रदान किया गया।

छपते-छपते

विजय वर्मा को बिहारी पुरस्कार

जानेमाने लेखक-गीतकार विजय वर्मा को साहित्य के क्षेत्र में

उल्लेखनीय अवदान के लिए बिहारी पुरस्कार तथा केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी से फैलोशिप प्रदान की गई। एतदर्थ शब्द रंजन की ओर से हार्दिक बधाई।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

लेखक खड़ा बाजार में

-डॉ. श्याममनोहर व्यास-

कबीरदासजी की यह साखी बहु प्रचलित है-

कबिरा खड़ा बाजार में लिये लकुटिया हाथ।
जो सर देवे आपनो चले हमारे साथ।।

आज के समय के साथ लेखक बिरादरी भी बढ़ रही है। सरकारी घोषणाओं का 'परिवार नियोजन' पर असर हो सकता है पर लेखकों का नियोजन सम्भव नहीं। समाज का हर वर्ग लेखकों की जमात में शामिल होना चाहता है। हर पढ़ा-लिखा व्यक्ति समझता है कि समाज में लोकप्रिय होने का यही सस्ता साधन है।

जाति-समाज के मुखिया सभा-सम्मेलनों में भाषण देते-देते जब उकता जाते हैं तो अपने कस्बे, नगर के चार पृष्ठीय अखबारों में अपनी रचनाएं छपवा कर आत्म मुग्ध हो जाते हैं। यदि पैसे वाले व्यक्ति हैं तो स्वयं के पैसे से अपनी तथाकथित 'आत्मकथा' भी छपवा लेते हैं फिर किसी मंत्री या राजनेता से उसका लोकार्पण करवा कर उसकी प्रतियां अपने परिजनों व मित्रों में बंटवा देते हैं। बची हुई प्रतियां घर की अलमारी में शोभा पाती हैं। जब उनमें दीमक लग जाती है तो रद्दी वाले की सहचरी बन जाती हैं।

अपवाद स्वरूप कई नवोदित लेखकों में प्रतिभा भी होती है। उनकी रचनाएं भी अच्छी-अच्छी पत्र-पत्रिकाओं में छपने लगती हैं पर जब वे उन रचनाओं को पुस्तक के रूप में छपवाना चाहते हैं तो प्रकाशक उन्हें घास नहीं डालते। एक उदाहरण प्रस्तुत है- मेरे एक मित्र हिन्दी के सम्मानित लेखक हैं। प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में उनकी रचनाएं प्राय: छपती रहती हैं। एक प्रकाशक ने उनकी प्रतिभा को पहचान कर उनकी एक पुस्तक प्रकाशित की। अपनी पहुंच के आधार पर प्रकाशक ने उस पुस्तक की सरकारी खरीद से अच्छा पैसा भी कमाया। लेखक ने जब उससे रायल्टी की मांग की तो प्रकाशक ने कहा- 'भाई साहब! हमने आपकी पुस्तक छाप कर आपको साहित्य जगत में प्रतिष्ठा और मार्केट दिया है। क्या यह किसी रायल्टी से कम है?'

बेचारे मित्र महादेय मन मसोस कर रह गए। आखिर वे क्या करते? वे साहित्य जगत के असंगठित मजदूर जो ठहरे। यह सच है कि लेखक व प्रकाशक का हमेशा से छत्तीस का आंकड़ा रहा है। कई लेखक अपने पैसे से पुस्तकें छपवाते हैं। मुख्य रूप से कविता व कहानी विधा की। तदनन्तर जोड़-तोड़ में रहते हैं कि कहीं से कोई सरकारी या गैर सरकारी संस्था उस पुस्तक पर कोई पुरस्कार दे दे या अनुदान ही मिल जाय ताकि लेखक को कुछ आर्थिक सहायता मिल जाय।

हिन्दी की अन्य विधाओं की मांग अवश्य रहती है पर इन विधाओं के विशेषज्ञ ही पुस्तकें लिख सकते हैं। उनको भी प्रकाशक प्रति पृष्ठ या एकमुश्त राशि देकर पुस्तक प्रकाशन का कॉपीराइट अधिकार लेखक से ले लेते हैं। इस प्रक्रिया में प्रकाशक पुस्तक की अच्छी बिक्री कर ढेरों पैसा कमाता है पर लेखक को फिर भी कुछ नहीं देता है। यह एक प्रकार से लेखक का शोषण ही है पर लेखक समुदाय इसका पुरजोर विरोध भी नहीं करता। करे भी कैसे? फिर उनकी पुस्तक छापे कौन? अन्ततोगत्वा विधि का यही विधान मान कर लेखक चुप बैठ जाता है।

कुछ पत्र-पत्रिकायें अवश्य लेखक को प्रकाशित रचनाओं पर अच्छा पारिश्रमिक देती हैं पर वहां प्रतिस्पर्धा काफी है। सच है, आज भी लेखक बाजार में ही खड़ा है।

लेखक खड़ा बाजार में, ले पाण्डुलिपि हाथ।
कौन भला मानुष है, जो दे उसका साथ।।

मरुथल में वृक्ष-पूजा की परम्परा

-डॉ. ज्ञानप्रकाश पिलानिया-

मरुस्थल के लोगों ने पेड़-पौधों का महत्त्व स्वीकार कर उनकी सुरक्षा एवं संवर्धन के लिए भी गंभीर एवं व्यापक प्रयास किये हैं। इन पेड़-पौधों का मानवीकरण कर इनमें देवताओं का वास बतलाया है। नीम में नारायण, पीपल में विष्णु, बड़ में शिव का वास बताकर उनको बचाने के प्रयास किये हैं।

यहां कम वर्षा होने के कारण सघन वनों का अभाव है परन्तु यहां के लोगों ने गोचर, औरण तथा डोली व्यवस्था द्वारा पेड़ों को बचाने की परम्पराएं विकसित की। किसी देवी-देवता, भोमिया तथा लोकदेवता के नामों से 'औरण' बनाकर वृक्षों को संरक्षित किया।

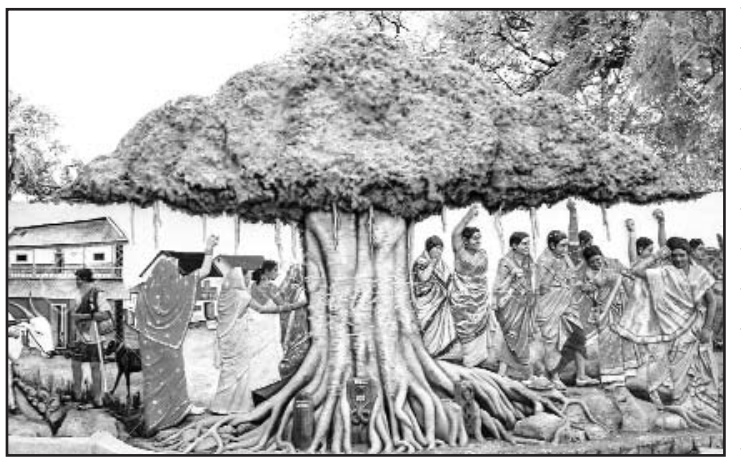

औरण भूमि से किसी भी प्रकार के पेड़ की हरी टहनी भी काटना प्रतिबन्धित होता है। इसके कारण आज भी गांवों में औरण के नाम पर वृक्षों की रक्षा होती है।

खेजड़ी राजस्थान के लोकजीवन का धार्मिक वृक्ष है। जोधपुर जिले का गांव 'खेजड़ली' तो राजस्थान का वृक्ष-संरक्षण का तीर्थस्थल है। विश्व में शायद ही ऐसा कोई स्थल होगा, जो वृक्ष-रक्षा हेतु बलिदान की परम्परा से जुड़ा हो। रूंख देवता यानी वृक्ष देवता के इस तीर्थ-स्थल को इतिहास का ऐसा पन्ना कहा जाता है जिसने पेड़ों के लिए हुए 302 विश्नोई महिलाएं-पुरुषों के अमर बलिदान की कथा अपने में सेजो रखी है।

दशनोक के करणीमाता मन्दिर के बारह कोस, लगभग 36 किलोमीटर की परिक्रमा में सुरक्षित पेड़ों का स्थल औरण छोड़ी गई है। यहां कभी कोई पेड़ नहीं काटता। वर्षों से यह परम्परा अनवरत चली आ रही है। यहां औरण भूमि पर नेहड़ीजी का मन्दिर है जहां किसी वार-त्यौहार या अवसर विशेष पर नहीं बल्कि प्रतिदिन ही खेजड़ी के वृक्ष की पूजा होती है।

राजस्थान के लोकजीवन में रूंख यानी पेड़ों की महिमा का गान है। लोग तीज-त्यौहार पर ही नहीं बल्कि प्रतिदिन ही अपनी दिनचर्या की शुरूआत घर में लगे पेड़ पूजन से ही करते रहे हैं। कोई शुभ कार्य यदि घर में होता है तो उसका आरम्भ वृक्ष या उसकी टहनी के पूजन से होता है। यहां की लोकसंस्कृति में मनुष्य और वृक्षों का अभी भी गहरा सम्बन्ध है।

शहरों में तो फिर भी आबादी के विस्तार के साथ प्राचीन काल से चली आ रही लोक-परम्पराएं लोप होती जा रही है परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में वृक्ष पूजा से अभी भी बहुत से स्तरों पर लोग जुड़े हुए हैं। गांवों में 'वृक्ष में राम रो वासो', वृक्ष में राम का निवास है कहते हुए पेड़ों से लोगों का गहरा जुड़ाव है।

वृक्षों में भी नीम में नारायण का रूप देखकर उसे पूजा जाता है। गांव-गांव में गोगा-खेजड़ी की पूजा का विधान है। गोगाजी राजस्थान के लोकदेवता हैं। खेजड़ी का वृक्ष विशेष रूप से राजस्थान के मरुस्थली भाग में ही पाया जाता है सो गांवों में लोकदेवता गोगाजी से जुड़ा हुआ मानते हुए खेजड़ी धोकी यानी पूजी जाती है।

गांव-गांव माताजी, भैरूजी, भोमियाजी आदि देवी-देवताओं के नाम से औरण भूमि आरक्षित करने का भी प्रावधान है। लोकजीवन में औरण की बाड़ , कांटों के पौधों से की जाने वाली चारदीवारी से सुरक्षित रखी जाती है। यहां पर उगने वाले किसी भी प्रकार के पौधे की एक टहनी तक को तोड़ना और पेड़ को किसी प्रकार की हानि पहुंचाना तक पाप माना जाता है।

लोकजीवन में पीपल के पेड़ में परमेश्वर का वास माना जाता है। इसीलिए उसके पूजन की परम्परा बरसों से चली आ रही है। पूजन के साथ ही बाकायदा पीपल पूर्णिमा में कोई भी कार्य करें तो उसके लिए किसी प्रकार के मुहूर्त निकालने की जरूरत नहीं है।

उस दिन सब शुभ ही शुभ होता है। पीपल सींचने को राजस्थान के लोकजीवन में सबसे बड़ा धर्म माना गया है। गांव-गांव में ही नहीं, शहरों में भी लोग इसीलिए पीपल पूजते हैं और पीपल के पेड़ को किसी भी स्थिति में काटा नहीं जाता है।

वृक्ष पूजन की परम्परा राजस्थान में नित्य कर्म के साथ ही विशेष रूप से तीज-त्यौहारों से जुड़ी हुई है। चैत्र महीने में गणगौर पूजन होता है। भौर में अविवाहित कन्याएं गीत गाती हुई फोग, मरुस्थली वनस्पति के फूल चुनकर कलसे की गवर बनाकर महादेवजी से अच्छे वर प्राप्ति की कामना करती हैं।

पुरानी प्रेमिका

(1)

तजारे के दाने की तरह
रुणक झुणक
मेरे कागज पर कविता सी
खिलती, खेलती, खिलखिलाती
उतर आती हो तुम
लूमा झूमा।
अंगुराये बदन सी आई थी
गूंदे सी, रस से सनी
अब दाख हुई देख रहा हूं
साख बढ़ गई है तुम्हारी।
तुम आज भी
पवनचक्की की तरह
फर्राटे खाती
जोशीली, उत्साहमय लगती हो।
हवा की गंध वहीं है
खटारा नहीं हुई है
मगर हवन से निकली सुगंध सी
दवा बन गई हो
मेरे दर्दे दिल के लिए।

(2)

पुरानी प्रेमिका
ग्यारसी घोड़े की तरह मिलती है
पहले से अब ज्यादा
सहमी-सहमी सी
बेटा बड़ा हो गया है
बहू आ गई है
और पोते-पोती घेरे रहते हैं
दादी पर सबका अंकुश चढ़ गया है
बिच्छू के जहर की तरह।
लहलहाते खेत पर
बाड़ अच्छी लगती है
मगर रामजी के घोड़े को
कौन रोक पाता है?
कीट कितना छोटा बन
प्रवेश कर जाता है फसल में
कहां से कैसे आता है?
गोफण तोते उड़ाता रह जाता है
तोती को पता भी नहीं चलता
कि कब उसके कंठी निकल आई है।
प्रेमिका पुरानी हो या नई
प्रेम में नया पुराना कुछ नहीं होता
समुद्र ठाठे मारता रहता है
नदी अविराम विलीन होती रहती है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।